अर्हम्

आज के वैज्ञानिक असंख्य विषयों का अध्ययन कर रहे हैं। उनकी रिपोर्ट भी प्रकाशित हो रही है। उनसे परिस्थिति और वातावरण को समझने का मौका मिल रहा है। मानवीय समस्याओं के अध्ययन का भी अनुभव मिल रहा है। उन अध्ययनों में मानव विकास के अन्वेषण या सर्वेक्षण का प्रमाण बहुत कम मिलता है। निष्कर्ष की भाषा में कहा जा सकता है – विश्व समाज में आर्थिक विकास, भौतिक विकास और पदार्थ विकास की होड लग रही है, मानव विकास को हाशिए पर रखा जा रहा है। यह एकांगी दृष्टिकोण और प्रयत्न समस्याओं की लंबी सूची तैयार कर रहा है। समाधान की खोज हो रही है। एकांगी दृष्टिकोण के द्वारा समाधान स्वयं समस्या बनता जा रहा है।

वास्तविक सच्चाई यह है कि मानव विकास को शून्य में रख कर किया जाने वाला विकास समस्या को सुलझाने वाला नहीं हो सकता। हम पदार्थ विकास के आधार पर मानव विकास की कल्पना न करें। मानव विकास वस्तुतः चेतना का विकास है, जिसके आधार पर शारीरिक और मानसिक रोग मुक्त, पदार्थ शक्ति मुक्त, तनाव मुक्त, शांतिमय आनंदमय जीवन का स्वप्न देखा जा सकता है।

सूक्ष्म तत्त्व की खोज आवश्यक है किन्तु उपभोगवाद, विलासिता और सुविधावाद के बढाने के लिए नहीं है। उपभोगवाद और सुविधावाद ने पर्यावरण की समस्या को जटिल बना दिया है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए उपभोगवादी और सुविधावादी मनोवृति पर नियंत्रण आवश्यक है। इस सच्चाई को स्वीकार करने वाले राष्ट्र भी उसे नजर अंदाज करने का प्रयत्न कर रहे हैं। विकास, बाजार और भूमंडलीय स्थिति पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की दौड़ में मूर्च्छा के चक्र का सृजन हो रहा है। व्यक्ति,समाज और राष्ट्र के चारों और अर्थ और पदार्थ परिक्रमा कर रहे हैं।

मानव जाति के अस्तित्व की सुरक्षा के लिए आवश्यक है, इस परिक्रमा की समाप्ति जिससे मानव तनाव–मुक्त, नशा–मुक्त अपराध–मुक्त और हिंसा–मुक्त हो कर स्वस्थ स्वर्ण क्षितिज का साक्षात्कार कर सके।

नए वर्ष के अवसर पर मानव मस्तिष्क को आंदोलित करने वाली उत्साह की ऊर्मियां नए मानव का निर्माण कर सके। इस भूमंडल को संभाव्य खतरों से बचाने के लिए हम सभी संयम प्रधान जीवन शैली का अनुसरण करने का संकल्प करे।

आचार्य महाप्रज्ञ